

CBSE Test Paper 01

अपठित गद्यांश

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

शिक्षा और गुरु के माध्यम से ही अपने आंतरिक गुणों को हम प्रकाश में लाते हैं। यदि धर्म के मार्ग पर चलकर मानव विज्ञ बनता है। तो वह अपने जीवन के मार्ग के विकास के लिए अनवरत लगकर जीवन को सफल बनाता है और सम्यक ज्ञान, गुण, धर्म से अपने जीवन को ब्रह्म से जोड़कर करोड़ों जन्मों के कर्मों से मुक्ति प्राप्त करता है, किन्तु यह शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा भी दो माध्यमों से मिलती है। एक जीविकोपार्जन का माध्यम बनती है तथा दूसरी से जीवन-साधना संभव होती है। दोनों में परिपूर्णता गुरु के माध्यम से ही होती है। जीविकोपार्जन की शिक्षा पाकर यह संसार बड़ा सुखमय प्रतीत होता है और जलते हुए दीपक के प्रकाश जैसा वह बाहरी जीवन में प्रकाश पाता है। दूसरी शिक्षा पाने के लिए सद्गुरु की तलाश होती है। वह सद्गुरु कहीं भी कोई भी हो सकता है, जैसे तुलसीदास की सच्ची गुरु उनकी पत्नी थी, जिनकी प्रेरणा से उनके अंतर्मन में प्रकाश भर गया और सारे विकार धुल गए। मन स्वच्छ हो गया। अपने दुर्लभ जीवन को सफल बनाकर हमेशा-हमेशा के लिए सुखद जीवन जिए। ऐसे ही ब्रह्म-ज्ञान व आत्मनिरूपण की सच्ची शिक्षा के बिना सार्थक जीवन नहीं मिलता। सच्चा ज्ञान मुक्ति का मार्ग है।

- i. हम अपने आन्तरिक गुणों को कैसे प्रकाश में लाते हैं?
- ii. व्यक्ति करोड़ों जन्मों के कर्मों से कैसे मुक्ति पाता है?
- iii. शिक्षा किन-किन माध्यमों से मिलती है?
- iv. तुलसीदास पर उनकी सच्ची गुरु का क्या प्रभाव पड़ा?
- v. जीविकोपार्जन की शिक्षा से मनुष्य को क्या प्राप्त होता है?

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

देना ही देवता की वास्तविक विशेषता है। असहाय व्यक्ति का शोषण करने वाला किसी को केवल दुःख दे सकता है। देने का काम वही कर सकता है जो स्वयं भी परिपूर्ण होता है। देवता स्वयं को भी देता है और दूसरों को भी। जिसने स्वयं को न दिया, वह दूसरों को क्या देगा? हम लोग अक्सर कहते हैं कंजूस किसी को कुछ नहीं देता। यह बात ठीक नहीं है कि कृपण दूसरे को नहीं देता, पर देता है? वह दीन-हीन की तरह रहता है और उसी तरह मर भी जाता है। देने से किसी व्यक्ति की सम्पन्नता सार्थक होती है। धन की तीन गतियाँ होती हैं-उपभोग, दान और नाश। जिसने धन का उपभोग नहीं किया, दान नहीं किया, उसके धन के लिए एक ही गति बचती है-नाश। घूस और अनैतिक ढंग से हड़पकर दूसरों के धन से घर भरने वालों का यही अन्त होता है। सत्ता, व्यापार, राजनीति में इस प्रकार के सफेदपोश लुटेरे छुपे हुए हैं। जो हम अर्जित करते हैं, वह हमारा जीवन है। धन हमारे जीवन का केन्द्र नहीं है। धन एक संसाधन है, जिससे हम अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हैं। धन एक सहायक-सामग्री है, जिससे हम जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। धन का काम है कि वह हमें सुख दे। यह सुख हमें तीन क्रियाओं से मिलता है-धन के अर्जन से, धन के उपभोग से और धन के दान से। इन तीन क्रियाओं से धन हमारी सेवा करता है। बाकी क्रियाओं से हम धन की सेवा करते हैं। कंजूस धन को बचा लेते हैं। अपव्ययी उसे उड़ा देते हैं, लाला उसे उधार देते हैं। चोर उसे चुरा लेते हैं, धनी उसे बढ़ा देते हैं, जुआरी उसे आँवा देते हैं और मरने वाले उसे

पीछे छोड़ जाते हैं।

- i. देवता की वास्तविक विशेषता क्या है?
- ii. कंजूस का जीवन कैसा होता है?
- iii. धन की कितनी गतियाँ होती हैं?
- iv. किस धन का नाश होता है?
- v. हमें सुख कैसे मिलता है?

CBSE Test Paper 01

अपठित गद्यांश

Answer

1.
 - i. शिक्षा और गुरु के माध्यम से।
 - ii. सम्यक ज्ञान, गुण, धर्म से अपने जीवन को ब्रह्म से जोड़कर व्यक्ति करोड़ों जन्मों के कर्मों से मुक्ति प्राप्त करता है।
 - iii. शिक्षा दो माध्यमों से मिलती है। एक जीविकोपार्जन का माध्यम बनता है तथा दूसरी से जीवन साधना संभव होती है।
 - iv. तुलसीदास की सच्ची गुरु अपनी पत्नी की प्रेरणा से उनके अंतर्मन में प्रकाश भर गया और सारे विकार धुल गए।
 - v. जीविकोपार्जन की शिक्षा प्राप्त कर मनुष्य को यह संसार बड़ा सुखमय प्रतीत होता है और जलते हुए दीपक के प्रकाश जैसे वह बाहरी जीवन में प्रकाश पाता है।
2.
 - i. देवता की वास्तविक विशेषता देना है। वह स्वयं को भी देता है और दूसरों को भी।
 - ii. कंजूस किसी को कुछ नहीं देता और स्वयं को भी कुछ नहीं देता है।
 - iii. धन की तीन गतियाँ होती हैं-उपभोग, दान और नाश।
 - iv. जिस धन का उपभोग नहीं होता और न ही दान दिया जाता है उस धन का नाश होता है।
 - v. हमें सुख तीन क्रियाओं से मिलता है-धन के अर्जन से, धन के उपभोग से और धन के दान से।